साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र
प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित प्रति अंक मूल्य 4 रुपये
Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

अच्छे शिक्षक कैसे बनें, आवश्यक गुण

✍ डॉ. भरत राज सिंह

विश्वगुरु का परचम दिलाया।

स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालय पद्धति : कलयुग में भी गुरु चाणक्य व रामकृष्ण परमहंस द्वारा भी शिक्षा अपने शिष्यों को आश्रम में ही देने का जिक्र मिलता है। परन्तु समय की माँग व आर्थिक युग के पदार्पण से शिक्षा भी व्यावसायिक रूप ग्रहण कर लिया और सभी नगरों व कस्बों में स्कूल व कॉलेज खोल कर शिक्षा का ज्ञान दिया जाने लगा। इसमें बड़े व छोटे, ऊँच–नीच की भावना से उबर नहीं पा रहे हैं और न ही ज्ञान का सही रूप दिया जा रहा है।

शिक्षण व्यवस्था पर विचार : प्रश्न यह उठता है कि इस भौतिकवादी व्यवस्था में क्या हम पुरानी शिक्षण प्रणाली को लागू कर सकते हैं। शायद यह संभव नहीं है। क्योंकि त्रेता व द्वापर युग की व्यवस्था हेतु त्याग की भावना सर्वोपरि है। जबकि आज का शिक्षक अपने को ही दूसरी सेवाओं के पदों के अनुरूप नीचा मानता है और शिक्षण को सेवा का अंतिम विकल्प पर रखता है। क्या इसमें सरकार व शासन को इस व्यवस्था के लिए जिम्मेदार माना जाए। मेरे विचार से यह सही नहीं होगा। समाज में शिक्षकों के स्तर को बढ़ाने की जरूरत है जिनमें नैतिकता का विकास पहले बहुत जरूरी है।

डॉ. भरत राज सिंह जो स्कूल ऑफ मैनेजमेंट के निदेशक हैं, का मानना है कि किसी देश के विकास में शिक्षा का विशेष महत्त्व है। ऐसे में हमें शिक्षण व्यवस्था में गुरुजन जिन्हें अनुभव है व वरिष्ठ है वह चाहे जिस क्षेत्र से सेवानिवृत्त हो समाज व राष्ट्र हित में जीम्मा उठाये कि वह अच्छे शिक्षक तैयार करेंगे। फिर शिक्षा व्यवस्था दुरुस्त करने की बात की जाए। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था अच्छे अंक, सर्टिफिकेट अथवा डिग्री दे सकती है, जो किसी भी अच्छे सेवायोजक की न्यूनतम आवश्यकता मानी जा सकती है, परन्तु उसमें नैतिकता का विकास नहीं है तो वह उस सेवायोजक के यहाँ पहले तो नौकरी नहीं पा सकता है। यदि वह नौकरी पा भी गया तो कार्यकुशलता के अभाव में कुछ ही दिनों में अयोग्य घोषित होकर निकाल दिया जाएगा।

यहाँ पर दो उदाहरण देना चाहेंगे : पहला रिओ में सिल्वर पदक पाने वाली मिस पीवी सिन्धु। उसमें क्या योग्यता पाई गई। उसने गुरु–शिष्य परंपरा का पूर्ण निर्वहन करते हुए, भौतिकता से दूर रह कर, अपने गुरु के दिशा–निर्देश में समर्पण भाव से शिक्षण प्राप्त किया। लक्ष्य एक ही था कि अपना पूर्ण ध्यान केन्द्रित कर खेल को उच्चस्तर पर पहुँचाना। तीन माह से मोबाइल फोन भी गुरु ने अपने पास रख लिया, जिससे उसका ध्यान खेल के अलावा कहीं न भटके। ऐसे शिक्षक–शिष्य को पूर्ण भारत ने सलाम किया। यही शिक्षा का स्तर, हमारे भारतवर्ष में त्रेता व द्वापर युग में भी था, जब माँ–बाप अपने बच्चों को गुरुकुल में गुरु को समर्पित कर पूर्ण शिक्षा की अभिलाषा करते थे।

दूसरा हमारे सैनिक जो किसी भी परिस्थिति में क्यों न हो, वह राष्ट्र भावना से ओत–प्रोत होकर अपने दुश्मनों के छक्के छुड़ा देते हैं। सलाम है ऐसे सैनिक शिक्षकों–शिष्यों को जो देश के लिए अपने को नैतिकता का पाठ इस कदर पढ़ाते हैं कि सैनिक अपने पूर्ण समर्पण भाव व ताकत के साथ लड़ाई करते हैं, कुर्बानी तक दे डालते हैं। यह भी ट्रेनिंग गुरुकुल परंपरा का एक जीता–जागता उदाहरण है।

अब मैं अच्छे शिक्षक हेतु कुछ टिप्स देना चाहूँगा : आज के इस भौतिकवादी युग में शिक्षा की गुणवत्ता का जिसमें शैक्षणिक योग्यता व अंकों की महत्ता केवल १५ प्रतिशत तथा नैतिकता विकास कार्य सम्पादित करने के सामर्थ्य पर ८५ प्रतिशत का सेवायोजक संस्थानों द्वारा दिया जा रहा है। अतः शिक्षण में कौशल विकाव व रवैया का पाठ बहुत जरूरी है।

किसी भी कार्य में सफलता की कुंजी : उत्साह–किसी भी कार्य करने में उत्साह जरूरी है। जैसे बचपन में बच्चे को पार्क ले जाने की बात पर वह पूरे दिन उत्साहित रहता है।

चमक : किसी भी कार्य में सफलता मिलते ही चेहरे पर चमक आ जाती है, हमें यह चमक शिष्य में पैदा करनी है।

लक्ष्य : प्रत्येक कार्य का लक्ष्य जरूर निर्धारित होना चाहिए, भले छोटा ही हो। यह गुण शिष्य में डालें, वह छोटे–छोटे लक्ष्य निर्धारित कर सफलता की सीढ़ी चढ़ने का अभ्यस्त होगा।

प्रचार : अच्छे कार्य करने के गुण को शिष्य में उभारना चाहिए ताकि वह दूसरों को भी बताए। इससे उसमें अधिक उत्साह व चमक उत्पन्न होगी।

कार्य करने में बहुत सी रुकावटें आती हैं जैसे–

(अ) मायूसी : किसी भी कार्य के असफलता पर मायूसी आती है, इसमें आगे कार्य करने में सुविधा मिलती है अतः इसका अच्छा पहलू ग्रहण करना चाहिए।

(ब) असंतोष : कार्य पूर्ण न होने व अच्छे से न होने से यह महसूस होता है परन्तु आगे के कार्य हेतु शिक्षा मिलती है।

(स) झुंझलाहट : कार्य मन से किया, गुणवत्ता सही नहीं रही। आगे इस पर विशेष ध्यान देना है।

(द) एकांत : असफल व कार्य संपादन में देरी। यह भविष्य में सुधार हेतु मौका है। सफलता अवश्य मिलेगी।

उक्त छोटी–छोटी बातें ध्यान में रख कर यदि बच्चों में अच्छी शिक्षा का विकास करेंगे आपका शिष्य आगे बढ़ेगा। आइये शिक्षक के दायित्व का निर्वहन करते हुए अच्छे शिष्य बनाने में राष्ट्र व विश्व को उत्तम दिशा देने में सहयोग करें।